अर्धालियों के पूर्णाकार

(पचहत्तर कृति-समीक्षाएँ)

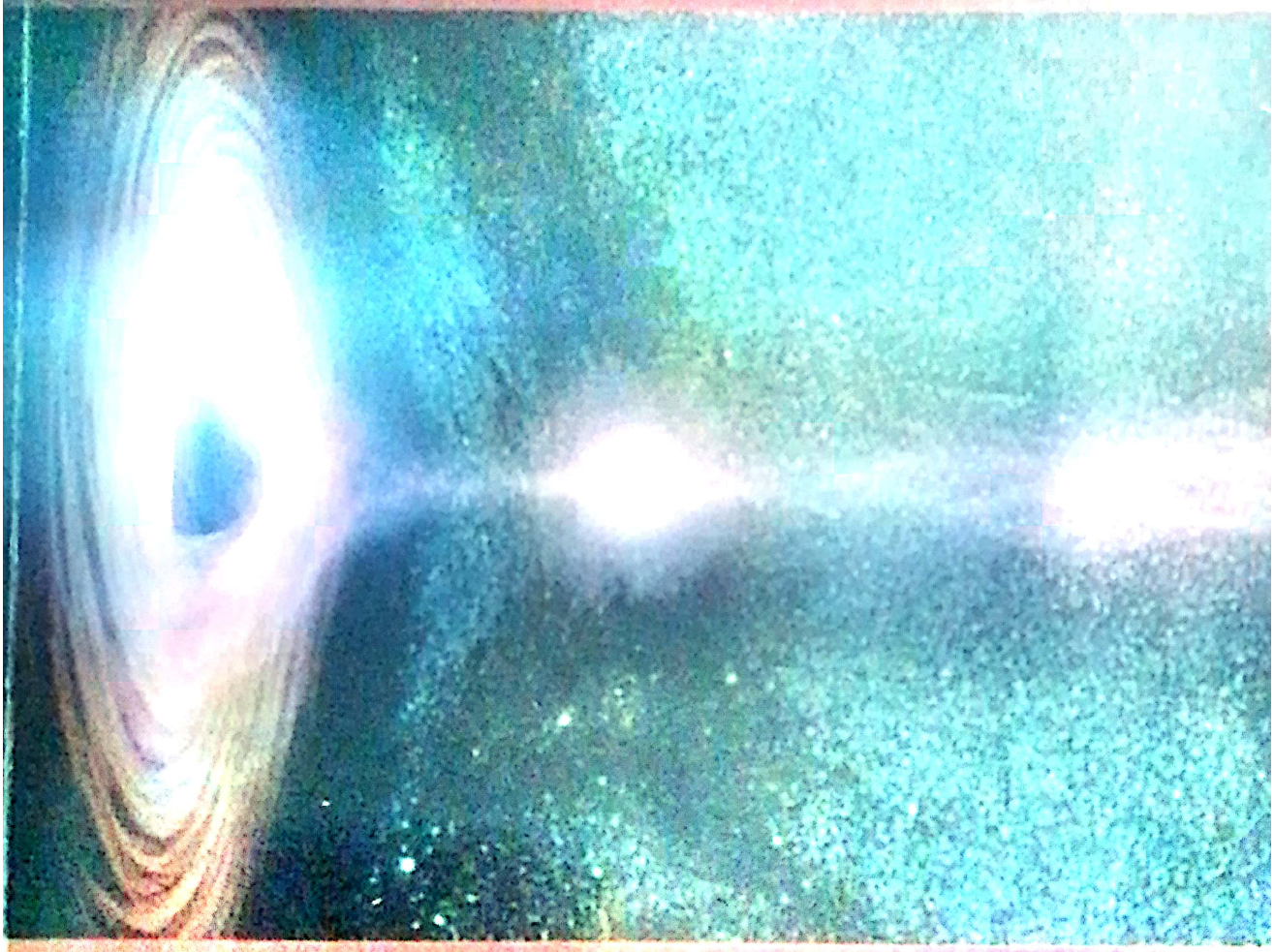

प्रभुदयाल मिश्र

प्रकाशक
तुलसी मानस प्रतिष्ठान मध्यप्रदेश, भोपाल

Scanned with OKEN Scanner

ISBN : 978-81-922279-2-4

अर्धालियों के पूर्णाकार (पचहत्तर कृति-समीक्षाएँ)
प्रभुदयाल मिश्र

© तुलसी मानस प्रतिष्ठान मध्यप्रदेश, भोपाल

प्रथम संस्करण-2016
मूल्य : रु. 200 मात्र

प्रकाशक
तुलसी मानस प्रतिष्ठान मध्यप्रदेश, भोपाल

मुद्रक
कृषिशोध प्रकाशन
सी-13, नारायण नगर, होशंगाबाद रोड़, भोपाल
ई-मेल : *krishishodh@gmail.com*

इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश की, फोटोकॉपी एवं रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रानिक अथवा मशीनी, किसी भी माध्यम से अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनः प्रयोग की प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप में, पुनरुत्पादित अथवा संचारित- प्रसारित नहीं किया जा सकता।

Scanned with OKEN Scanner

अनुक्रम

श्री प्रभुदयाल मिश्र की समीक्षा दृष्टि .... एन.एल. खण्डेलवाल 06

साहित्य

१. स्वर्ग का अग्नि–द्वार / अग्नि-द्वार 10
२. 'कामरूप' जानहि बहु माया / कामरूपा 13
३. नश्वर देह का अमृत शैव–दर्शन / काशी मरणान्मुक्ति 15
४. देह का मुक्ति– व्यापार / निर्बंध देह-गंध 18
५. कवि– दृष्टि का प्रकाश / कुहरीले इशारों से 22
६. जीवन की अनन्तता में एक अन्वेषण यात्रा / तलाश ही जीवन है 24
७. पुराणमित्येव 'हि' साधु सर्व / दादा-पोता पुराण 27
८. जिस तरह तू सोचता है / काऊ सें का कईए 31
९. विस्मृत वैभवशाली अतीत से साक्षात्कार / कौंडिन्य 34
१०. शतक – त्रय की भूमिका में एक कवि / त्रिपथगा 37
११. जग में अपने होने का अहसास / जग में मेरे होने पर 39
१२. 'दूब' की ताजी छुअन की कवितायें / हाशिए में दूब 42
१३. विद्रोही–स्वर साधना / विद्रोही स्वर 46
१४. ओरछा की एक प्रवीण राय 'रानी' / एक थी राय प्रवीण 48
१५. बुंदेलखंड का अंतर्साक्ष्य / बुंदेलखंड का साहित्यिक एवं सांस्कृतिक परिदृश्य 51
१६. हिन्दी वर्ण और वर्तनी का मानकीकरण / विराम चिह्न : प्रकार एवं प्रयोग 54
१७. गीत का लौकिक संगीत / आदमी के गीत 56
१८. संस्पर्शी घटनाओं का कथा–संस्करण / मेरा कुसूर क्या है 58
१९. भौतिकतावाद की उघाड़ / श्री उलूकाय नमः 60
२०. 'ऊर्ध्व का त्रिपाद' / पांचवां क्षितिज 61
२१. एक अभिनव पहल / बुन्देली शब्दों का व्युत्पत्ति कोश 64
२२. शब्दातीत / ऋतु संहार (बुन्देली पुनर्रचना) 67
२३. धूमिल के साथ तुलसी की मिठास / देह धरे का दर्द 68
२४. गीतों का अष्टदल– कमल / गीत अष्टक 70
२५. समय को समय से परे देखने की दृष्टि / ओ समय के दूत 73
२६. "चक्रव्यूह" में द्रोणाचार्य / चक्रव्यूह 74

Scanned with OKEN Scanner

२७. सूत्रधार से 'सूत्रधार' तक / सूत्रधार 75
२८. राम का 'युगीन आधिपत्य' / युगाधिपति 77

रामायण-शोध

२९. 'अथ क्षेपक' कथा / रामचारित मानस में प्रक्षेप 80
३०. 'अक्ष– माल' संक्षिप्त रामायण / तुलसी रामायण 1008 पंक्तियों में 82
३१. मानस शब्द–कोश क्रमावली / मानस शब्द क्रमावली 84
३२. तुलसी की अर्द्धालियों का पूर्णाकार / चिदानंदमय देह तुम्हारी 86
३३. तुलसी संदर्भ कोश / तुलसी अनुक्रमणिका 87
३४. वाल्मीकि रामायण और विश्वजनीन काव्य–निकष / वाल्मीकि रामायण 88
३५. भारतीय संस्कृति में मानस की अवस्थिति /
भारतीय संस्कृति और रामचरित मानस 90
३६. तुलसी काव्य का मंगल पक्ष / लोक मंगल के कवि तुलसीदास 91
३७. मानस की तंत्रपरक व्याख्या / मानस मकरन्द 92
३८. मानस का संजीवनी तत्व / मानस संजीवनी 93
३९. सुगन्धि–पुष्टिवर्धक मानस मकरन्द / रामचरित मानस में उद्भिज प्रसंग 94
४०. रामोपाख्यान और तुलसी / तुलसी वाङ्मय: विविध कोणों से 95
४१. तुलसीदास का चिंतन / तुलसीदास का चिंतन 97
४२. रामकथा की रस–मंदाकिनी / रामकथा मंदाकिनी 99
४३. दोहों में रामकथा–पात्र / रामकथा पात्रामृतम् 100
४४. नेक कही नैननि / नयन विनु वाणी 101

भक्ति-साहित्य

४५. 'सुन्दर' सुन्दर–काव्य सुहावन / संत कवि सुन्दरदास 104
४६. दिव्य– रस आह्लाद का 'महारास शतक' / महारास शतक 106
४७. वेदान्त पर भक्ति की विजय का तुमुल नाद / अक्रूर शतक 108
४८. लिंगायत 'वचन' परम्परा का प्रकाश / वचन 110
४९. अपने को अलग रख 'अपना ' कहने का प्रयास / हृदय मंथन 112
५०. श्रीराम का परिताप : एक परिपक्व रचना / परिताप-उत्तरार्ध रामकथा 113

Scanned with OKEN Scanner

75
77

संस्कृति

80 ५१. भारत की सांस्कृतिक पहचान / **भारतीय सांस्कृतिक कथाएँ** 116
82 ५२. बाल संस्कार में 'प्रह्लाद' / **मैं प्रह्लाद हूँ** 118
84 ५३. संस्कृति के स्वर अर्थात् "मानस" की अनुगूंज / **संस्कृति के स्वर** 121
86 ५४. वेदवाणी द्वारा तत्वज्ञान / **वेदवाणी का रहस्य** 122
87 ५५. भारतीय इतिहास का पुनर्लेख / **महाभारत का कालनिर्णय** 124
ग 88 ५६. संस्कृति– धर्मा की राष्ट्र व्यापी चिन्तायें / **राष्ट्र-चिन्तनम्** 126
५७. योग की वेदान्तिक भूमिका / **योग एक कल्पवृक्ष** 128
५८. अस्पर्शता पर स्वामी विवेकानंद / **स्वामी विवेकानंद और अस्पर्श्यता** 132
90 ५९. पत्थर की परत उघारते हुए / **बुंदेलखंड के शिलालेख** 134
91 ६०. शरीर के लेखे भविष्य / **हस्त रेखाएं रोग और भाग्य** 138
92 ६१. गीता के ज्ञान की मनोवैज्ञानिक पृष्ठभूमि / **भावोन्माद का मार्गान्तरीकरण** 140
93 ६२. हृदयाकाश में आत्मा का दर्शन / **नचिकेता** 142
ा 94 ६३. सांस्कृतिक दुर्घटना का शिकार श्रवणकुमार / **काँवर श्रवण कुमार की** 147
95 ६४. ईशावास्यमिदं सर्वम् / **वासुदेवः इदं सर्वं** 150
97 ६५. विद्यामेषं वृजनं जीरदानुम् / **महर्षि अगस्त्य द्रष्ट ऋग्वेद मंत्र भाष्य** 151
99 ६६. स्वामी विवेकानन्द समग्र / **युग प्रेरक स्वामी विवेकानंद** 155
100 ६७. नगर और जनपदीय संस्कृति का संघर्ष / **एकलव्य** 157
101 ६८. साहित्य की सांस्कृतिक पहचान / **संस्कृति और साहित्य** 161
६९. परम्परा अर्थात् हेरीटेज : संस्कृति! / **संस्कृति के दूत** 162
104 ७०. सूचना क्रान्ति से संस्कृति का साक्षात्कार / **सुन्दरकाण्ड-एक पुनर्पाठ** 165
106 ७१. महाभारत का विश्वकोश / **भारत में महाभारत** 167
108 ७२. अर्वाचीन का दाक्ष्य समाधान / **प्रशासन और पारदर्शिता** 172
110 ७३. सुख दुःखे समे कृत्वा / **नानक दुखिया सब संसारा** 173
112 ७४. भाषान्तर की चुनौती (मानस का अंग्रेजी रूपान्तरण) / **दी हिम्स आफ हिमालया** 175
113 ७५. सरस्वती संस्कृति के विस्तार के अन्तःसाक्ष्य / **चित्रांश** 185

Scanned with OKEN Scanner

डा. प्रेम भारती आध्यात्मिक विषयों के श्रेष्ठ लेखक हैं । इसी शृंखला में उनकी पुस्तक 'तुलसी के राम' एक उल्लेखनीय कृति है । इस पुस्तक में श्री प्रमुदयाल मिश्र के अनुसार 'तुलसी के जीवन परिचय से लेकर रामकथा के बहुश्रुत पक्ष जैसे जीवन–संस्कार, पारिवारिक आदर्श, सामाजिक समरसता, विविध धर्मादर्श और रामराज्य आदि ऐसे अध्याय हैं जिन्हें लेखक ने संपूर्ण सजगता और सकारात्मकता के साथ उकेरा है।' इस प्रकार समीक्षक ने थोड़े ही शब्दों में पुस्तक की विशेषताओं को समेट लिया है।

पंडित तुगनाथ चतुर्वेदी की पुस्तक 'मानस संजीवनी' इस बात की पड़ताल करती है कि तुलसी ने मानस के अंत में 'सत पंच' चौपाई कह कर क्या संकेत दिया है । इस संबंध में श्री मिश्र जी का दृष्टिकोण है –'पहले तो यही प्रश्न उठता है कि उनका अभिप्राय 105 से है अथवा 500 या कि एक मुहावरे के तौर पर सात–पांच (पांच–सात) चौपाइयों से । अर्थात् वे कुछ पंक्तियों भर की बात कर रहे हैं । लेखक ने तुलसी की विशेषता के अनुरूप इसमें गहरा संकेत समझा है।... लेखक की पहली धारणा यह है कि 105 की संख्या कुल चौपाइयों का 1 प्रतिशत है।... दूसरा उनका महत्वपूर्ण तर्क यह है कि जो उपदेश श्री राम ने विभिन्न अवसरों पर अलग अलग पात्रों को दिए हैं, वस्तुतः यह संख्या वही है। इसे किसी शोध अथवा अध्ययन की श्रेणी में रख पाना कठिन है।... अन्ततः इस पुस्तक के संबंध में निष्कर्ष के रूप में यही कहा जा सकता है कि लेखक के द्वारा दिए गए संकेत में उसका अपना निष्कर्ष भी शामिल हो गया है!'

श्री मिश्र ने अपनी समीक्षा दृष्टि में कतिपय कृतियों का मूल्यांकन करते हुए अनेक सार्थक संकेत किए हैं। दादूराम शर्मा की 'तुलसी वाङ्मय विविध कोणों से' को प्रामाणिक आधार सामग्री, श्री रमाकान्त शर्मा की 'मानस मकरंद' को 'तंत्रपरक व्याख्या का निदर्शन', श्री चन्द्रकिशोर शर्मा के खण्डकाव्य 'परिताप' को 'रामकथा का उत्तरार्ध' और 'परिपक्व तथा प्रदीप्त रचना' मानते हुए कहा है कि कवि ने इसमें 'राम द्वारा सीता के निर्वासन को राम की वैयक्तिक संवेदना में पिरोया है'।

अभी श्री मिश्र जी की कलम न तो रुकी है और न ही थकी है। निश्चित ही हिन्दी समीक्षा जगत उनसे बड़ी आशा कर सकता है ।

Scanned with OKEN Scanner